सं. ग्रो. वि./एफ० डी०/84/28314—चूंकि हरियाणा के राज्यशाल की राये है कि मैं. बोनस मैटल प्रा. लि., प्लाट नं० 197, सैंक्टर-24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री विजेन्द्र सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांष्टनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रीधितयम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जुन, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रीधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीधित्यम की घारा 7 के श्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायित्य के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विधादग्रस्त मामला है या विधाद से मुसंगत ग्रायवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री विजेन्द्र सिंह की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. थो. वि/गुड़गावा/87-84/28321.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. ओ० के० मैटल वर्कस, पटौदी रोड़, गुड़गांवा, के श्रमिक श्री नरेश कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, मौद्योगिक विवाद मिर्मित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गांक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी धिंधसूचना सं० 5415→3→श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं० 11495—जी—श्रम-57/11245, दिमांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की घारा 7 के प्रधीन गठित श्रम त्यायालय, फरीदाबाद, को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला त्यायनिर्णय के लिए निर्विष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रयोग सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री नरेश कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है?

सं मो.वि./हिसार/9-84/28328.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाम की राये है कि हरियाणा वेयर हाउसिंग कारपोरेशन, एस०सी०ग्री० नं 8, सैक्टर-17-ई चण्डीगढ़, के श्रीमिक श्री नेम नाथ जैन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके निश्चित बाद मामसे में कोई ग्रीचोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेंत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, भौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई किस्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिस्चना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर. 1970 के साथ पठित सरकारी प्रधिसूचना सं. 3864-ए.एस.प्रो. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहुँतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो, विवादप्रस्त भामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या भी नेम नाथ जैन की सेवाओं का समापन न्यास्रोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं॰ श्री. वि./गुड़गांवा/89-84/28334. - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. श्रो॰ के॰ मैटल वकंस, पटौदी रोड़, गुड़गांवा, के श्रमिक श्री शिव प्रसाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके काद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपास इस विवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इस लिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रीधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के गठित श्रम न्यायालय, फ़रीदावाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नी वे लिखा मामला न्याय निर्णय के लिए निर्दिण्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संम्बन्धित मामला है:---

नया श्री शिव प्रसाद की सेवाय्रों का समापन न्यायोचिंग तथा ठीक है ? तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भी.वि./गुडगांवा/38-84/2834 1.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० थ्रो. के मैटल वर्कस, पटौदी रोड़, गुड़गांवा के श्रमिक श्री लक्ष्मी कान्त तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीदोगिक विवाद है;

भीर चं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्विष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौडोगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हिरयाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिमूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं. 11495-जी श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला के लिए न्यायिनियम निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री लक्ष्मी कान्त की सेवाओं का समापन न्याथीचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं भो.वि./जी.जी.एन./86-84/28348.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. ग्रो. के मटल वर्कस, पटौदी रोड़, गुडगावां, के श्रमिक श्री सिया राम सथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भोदोगिक दिवाद है;

धौर पूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना विश्वनीय समझते हैं ;

इसलिए, शब, भौद्योगिक विवाद श्रीधिनयम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई कि निर्मा का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनोक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रीधसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनोक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीधिनयम की धारा 7 के श्रीम गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यावनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रायवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री सिया राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो. वि./युड़गांवा/83-84/28355.— चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. श्रो० के० मेंटल वर्कस, पटौदी रोड़, गुढ़गांवा के श्रमिक श्री मांग राम सथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रीचोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई भिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनयम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है,

क्या श्री मांग राम की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?